BABA MASTNATH UNIVERSITY

ASTHAL BOHAR, ROHTAK

Public Relations Office

Name of the Publication ....HARI BHOOMI............

Date ...06/04/2025... Page ......09...... Column ......03......

Subject ...भारतीय ग्रंथों मे निहित ज्ञान केवल धार्मिक नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अद्वितीय है : कुलपति

भारतीय ग्रंथों में निहित ज्ञान केवल धार्मिक नहीं बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अद्वितीय है : कुलपति

- बाबा मस्तनाथ विवि में भारतीय ज्ञान परंपरा पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन संपन्न

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रोहतक

रोहतक। बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में श्रेष्ठ शोध पत्रों के शोधकर्ताओं को सम्मानित करते हुए कुलपति प्रो. एच.एल. वर्मा।

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय में भारतीय ज्ञान प्रणालीः गौरवशाली अतीत से उज्ज्वल भविष्य तक विषय पर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस महत्वपूर्ण सम्मेलन का आयोजन बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, महाराजा अग्रसेन विश्वविद्यालय (हिमाचल प्रदेश) और आईके गुजराल पंजाब तकनीकी विश्वविद्यालय (पंजाब) के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित कर इसे वैश्विक स्तर पर प्रभावी रूप से प्रस्तुत करना। सम्मेलन के दूसरे दिन विभिन्न शोध पत्र वाचन, पैनल चर्चाएं एवं विद्वानों के संवाद आयोजित किए गए। इसमें विशेषज्ञों एवं शोधकर्ताओं ने भारतीय ज्ञान प्रणाली के विविध आयामों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस संगोष्ठी की सफलता में महंत बालकनाथ योगी एवं डॉ. नंद किशोर गर्ग का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उनके प्रेरणादायक विचारों और भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति उनकी गहन प्रतिबद्धता ने इस आयोजन को विशेष उपलब्धि प्रदान की। उन्होंने कहा कि भारतीय शिक्षा प्रणाली का वैश्विक पुनरुत्थान आवश्यक है और यह संगोष्ठी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. एचएल वर्मा ने भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता और उसके संरक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय ग्रंथों में निहित ज्ञान केवल धार्मिक नहीं बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी अद्वितीय है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि यदि हमें वैश्विक मंच पर भारत को एक ज्ञान-संपन्न राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करना है।

सांस्कृतिक मूल्यों को बचाना जरूरी

मुख्य अतिथि प्रो. परविंदर सिंह ने भारतीय ज्ञान परंपरा की वैश्विक स्वीकार्यता एवं उसकी आधुनिक समाज में उपयोगिता पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि योग, ध्यान और आयुर्वेद जैसे विषयों को विश्वभर में मान्यता प्राप्त हो रही है, जो इस बात का प्रमाण है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली कितनी प्रभावशाली है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हमे अपने सांस्कृतिक मूल्यों को बचाए रखते हुए आधुनिकता को अपनाना चाहिए।